प्रकाशन तिथि : 15 नवम्बर, 2024
प्रेषण तिथि : 19 नवम्बर, 2024

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 17 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

प्रेरणा के जागरण और संस्कारों के निर्माण से रुकेगा पतनः संघप्रमुख श्री

(जाम कंडोरणा, चरेल, दिवराला, पांचोटा, कल्याणपुर और सनावड़ा में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न)

श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिविर स्थल अपने आप में दर्शनीय स्थल है, एक तीर्थ स्थल है। कोई भी अच्छी चीज चाहे वह किसी भी कौम में हो, किसी भी धर्म में हो, किसी भी देश में हो, किसी भी राज्य में हो, वह दर्शनीय होती है, ग्रहण करने योग्य होती है। अच्छी चीज यदि दुश्मन में हो तो भी वह प्रेरणा प्राप्त करने के योग्य होती है। इसीलिए रावण जब मृत्युशय्या पर था तब भगवान राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को रावण के पास शिक्षा लेने के लिए भेजा। वह शिक्षा भगवान राम स्वयं भी लक्ष्मण को दे सकते थे किंतु उन्होंने संसार को यह प्रेरणा देने के लिए ऐसा किया कि यदि श्रेष्ठ वस्तु शत्रु के पास भी हो तो भी हमें उसे ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। लेकिन आज हम इन सभी बातों को भूलते जा रहे हैं और इसीलिए सभी पतन की ओर बढ़ रहे हैं। चाहे क्षत्रिय हो, ब्राह्मण हो, वैश्य हो, शूद्र हो या अन्य कोई हो, सभी इस पतन के कुएं की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन हम इसे देख नहीं पा रहे हैं क्योंकि वास्तविकता को, सत्य को देखने के लिए जिस भीतरी दृष्टि की आवश्यकता है, वह हमारे पास नहीं है। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

उदयपुर में दो दिवसीय वैश्विक क्षत्रिय सम्मेलन संपन्न

उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय के विवेकानंद सभागार में 26 व 27 अक्टूबर को मेवाड़ क्षत्रिय महासभा संस्थान एवं मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के तत्वावधान में विभिन्न क्षत्रिय संगठनों का दो दिवसीय वैश्विक क्षत्रिय सम्मेलन आयोजित हुआ। नाथद्वारा विधायक विश्वराज सिंह मेवाड़ की अध्यक्षता में संपन्न हुए सम्मेलन में दो दिन तक विभिन्न सत्रों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई एवं समाज के वर्तमान और भविष्य को लेकर चिंतन किया गया। मुख्य अतिथि वंशवर्द्धन सिंह बूंदी ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कृति और संस्कार ही क्षत्रिय की पहचान है। आज हमारी संस्कृति पर चारों ओर से आक्रमण हो रहे हैं, इन्हें रोकने के लिए हम सबको मिल कर कार्य करते हुए समाज को सबल बनाना होगा। सुदर्शनाचार्य महाराज ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि क्षत्रिय आदिकाल से भारतीय समाज के सभी वर्गों के लिए मार्गदर्शक की भूमिका निभाता आया है। आज भी क्षत्रिय जाति को अपने उस कर्तव्य का पालन करते हुए सभी को साथ लेकर चलना चाहिए। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा के केंद्रीय अध्यक्ष अशोक सिंह मेतवाला ने कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए सबसे पहली आवश्यकता समाज में एकता स्थापित करने की है। अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखते हुए इतिहास के विकृतिकरण और क्षत्रिय महापुरुषों की पहचान से छेड़छाड़ के कृत्यों पर रोष जताया और पानरवा के पूंजा जी सोलंकी के सही इतिहास को सामने लाकर उनके बारे में फैलाई जा रही भ्रांतियों को दूर करने की बात कही। सम्मेलन के मुख्य संयोजक जालम सिंह दातड़ा ने सम्मेलन की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रो. दरियाव सिंह चुंडावत और रणवीर सिंह जोलावास ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मेवाड़ मालवा संभाग प्रमुख बृजराज सिंह खारडा, मेवाड़ वागड़ संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला एवं उदयपुर शहर प्रांत प्रमुख फतेह सिंह भटवाड़ा सहयोगियों सहित सम्मेलन में उपस्थित रहे। खारड़ा के निर्देशन में सम्मेलन के प्रारंभ में सामूहिक यज्ञ भी किया गया।

पूर्व सांसद महेंद्र सिंह मेवाड़ का निधन

मेवाड़ राज परिवार के सदस्य एवं पूर्व सांसद महेंद्र सिंह मेवाड़ का निधन 10 नवंबर 2024 को हो गया। 11 नवंबर को उनकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में जनसमुदाय ने शामिल होकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने उदयपुर स्थित समोर बाग पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उनके निधन पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' के माध्यम से शोक व्यक्त किया। महेंद्र सिंह 1989 में चित्तौड़गढ़ से लोकसभा का चुनाव जीत कर सांसद बने थे। एक शिक्षाविद के रूप में भी पहचान रखने वाले महेंद्र सिंह विद्या प्रचारिणी सभा, उदयपुर के अध्यक्ष और संरक्षक भी थे। उनके पुत्र विश्वराज सिंह मेवाड़ वर्तमान में नाथद्वारा से विधायक हैं एवं उनकी पुत्रवधू महिमा कुमारी राजसमंद से सांसद हैं।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक देवी सिंह जी महार का देहावसान

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक देवी सिंह जी महार का 11 नवंबर 2024 को देहावसान हो गया। श्री महार पूज्य तनसिंह जी के प्रारंभिक सहयोगियों में से एक थे। अपने विशद अध्ययन के फलस्वरूप आपने हमारे ऐतिहासिक नायकों से जुड़ी अनेक भ्रांतियों का खंडन किया एवं तथ्यपूर्ण जानकारियां समाज के सामने रखी। समाज में एक प्रखर विचारक के रूप में पहचाने जाने वाले श्री महार के प्रति पथप्रेरक परिवार अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है।

प्रेरणा के जागरण और संस्कारों के निर्माण से रुकेगा पतनः संघप्रमुख श्री

चरेल

पांचोटा

(पेज एक से लगातार)

उस दृष्टि को हमें वापस प्राप्त करना होगा। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने गुजरात के राजकोट जिले के जाम कंडोरणा में स्थित राजपूत समाज भवन में 4 से 10 नवंबर तक आयोजित हुए माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कही। उन्होंने कहा कि हमने हमारे इतिहास से प्रेरणा लेना बंद कर दिया है, उसे भुला दिया है। हमारे पूर्वज जो स्वयं मरकर भी दूसरों को जीवन दिया करते थे उनकी प्रेरणा को हमने भुला दिया है। उस प्रेरणा के अभाव में ही हमारी यह स्थिति हो रही है। इस प्रेरणा के पुनः जागरण के लिए और हमारे पूर्वजों द्वारा उपार्जित संस्कारों की पुनः स्थापना के लिए पूज्य श्री तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। संस्कारों का निर्माण केवल अभ्यास से ही संभव है इसीलिए बार-बार ऐसे शिविरों का आयोजन करके श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज की युवा पीढ़ी को क्षत्रियोचित संस्कारों के इस अभ्यास में नियोजित कर रहा है। इससे पूर्व स्वागत के समय संघप्रमुख श्री ने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने आप में एक यज्ञ का रूप है जिसे प्रज्वलित रखने के लिए त्याग रूपी आहुति की आवश्यकता है। आप इस सात दिवसीय शिविर में वही त्याग रूपी आहुति अर्पित करने के लिए आए हैं। आपने अपने धन का, समय का, सुख सुविधाओं का त्याग इस यज्ञ के निमित्त किया है। अब आपको इन सात दिनों तक निरंतर जागृत और सतर्क रहना है कि यह आहुति कहीं व्यर्थ ना हो जाए। यदि यहां मिलने वाले शिक्षण को लेने में कोई लापरवाही रह गई तो आपका यह त्याग व्यर्थ चला जाएगा। इसलिए अगले सात दिनों तक यहां की प्रत्येक गतिविधि में पूर्ण मनोयोग से भाग लें और संघ तत्व को अपने भीतर ग्रहण करने का प्रयत्न करें। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ सांख्य योग के सिद्धांत पर चलने वाला संगठन है। इसलिए हमें परिणाम की चिंता छोड़कर निश्चिंत होकर इस कार्य में लगना चाहिए क्योंकि यह कार्य हमारा नहीं ईश्वर का है। हमें तो इसमें केवल निमित्त बनना है। इन सात दिनों तक हम इस सांख्य योग का ही अभ्यास करेंगे। 8 नवंबर को गुजरात सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं वर्तमान में जामकंडोरणा-जेतपुर से विधायक जयेश भाई रादडिया शिविर में पहुंचे एवं माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास से भेंट की। उनके साथ राजपूत समाज के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मौजूद रहे। शिविर में गुजरात के विभिन्न जिलों से 81 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुजरात में राजकोट जिले की जाम कंडोरणा तहसील के ही चरेल गांव में सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर 4 से 10 नवंबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन जागृति बा हरदासकाबास द्वारा किया गया। उन्होंने बालिकाओं के भाल पर तिलक लगाकर उनका स्वागत किया और कहा कि इन सात दिनों के शिविर में आपको कोरे कागज की भांति बनकर रहना है। जो कुछ भी शिक्षण यहां बौद्धिक, सहगीत, खेल, चर्चा आदि गतिविधियों के माध्यम से दिया जा रहा है, उसे आप तभी ग्रहण कर सकेंगी। जिस प्रकार भरे हुए घड़े में और पानी नहीं डाला जा सकता, पहले उसे खाली करना होता है उसी तरह हमें भी अपने आपको खाली करके शिविर में रहना है। यदि हमने ऐसा किया तो हम यहां से नए संस्कार और नई ऊर्जा लेकर जाएंगी। शिविर के दौरान 7 नवंबर को माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में स्नेहमिलन का भी आयोजन किया गया जिसमें आसपास के गांवों से सैकड़ो की संख्या में मातृशक्ति सम्मिलित हुईं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि अनेकों पीढ़ियों पहले हमारी माताओं ने जौहर जैसी अद्वितीय परंपराओं का पालन करके हमारे लिए प्रेरणादायी इतिहास निर्मित किया। माता पद्मिनी, हाड़ी रानी जैसी वीरांगनाओं की कहानी सुनकर हम आज भी प्रेरणा प्राप्त करते हैं। लेकिन हमारे लिए यह विचारणीय है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए क्या हम कोई प्रेरणादायी इतिहास निर्मित करने का कार्य कर रहे हैं? यदि प्रेरणा ही समाप्त हो गई तो एक कौम के रूप में, एक जाति के रूप में हम जीवित नहीं रह पाएंगे। इसलिए हमें इस प्रकार का जीवन जीना है जिससे हमारे आने वाली संतान को गौरव और प्रेरणा प्राप्त हो। यह तभी हो सकेगा जब हमारे अंदर धैर्य, त्याग और शौर्य जागृत होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें अपने शिविरों में उसी धैर्य, त्याग और शौर्य का अभ्यास करा रहा है। जागृति बा हरदासकाबास ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए महिलाओं एवं बालिकाओं में हो रहे संस्कार निर्माण के कार्य के बारे में विस्तार से जानकारी दी और कहा कि परिवार में माता की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि वही अपनी संतान के चरित्र का निर्माण करती है। इसलिए माता का संस्कारित होना सबसे अधिक आवश्यक है। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज भी रखा गया। शिविर में क्षेत्र के विभिन्न गांवों से 55 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

जयपुर संभाग में श्रीमाधोपुर क्षेत्र के दिवराला गांव में भी एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 26 से 31 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने स्वागत के समय शिविरार्थियों से कहा कि संसार में सभी प्राणी प्रकृति द्वारा नियत कर्म को करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं। लेकिन केवल मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो अपने कर्तव्य को भूल गया है। मानव जीवन एक अमूल्य थाती है। इसका हेतु समझ कर इस जीवन को क्षुद्रता से हटाकर महानता की ओर ले जाना ही जीवन को सार्थक करने का उपाय है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें अपने आप में निखार लाकर निरंतर जीवन को श्रेष्ठता की ओर बढ़ाने का अभ्यास कराता है। विदाई संदेश में शिविरार्थियों से कहा गया कि यहां से जाने के बाद भी सदैव स्मरण रखें कि आप श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं। यह स्मृति तभी बनी रहेगी जब आप निरंतर संघ के संपर्क में और संघ के अनुकूल बने रहेंगे। बाहर का वातावरण यहां प्राप्त किए गए शिक्षण के लिए अनुकूल नहीं है इसलिए उस वातावरण से अपने आप को बचाए रखना है और इस शिक्षण के लिए अनुकूल तत्वों के निरंतर संपर्क में रहना है। शिविर में जयपुर और शेखावाटी संभाग के 70 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जय सिंह, विजेंद्र सिंह, विक्रम सिंह, धीर सिंह, प्रदीप सिंह सहित समस्त ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। जालौर संभाग के पांचोटा गांव में स्थित श्री नागणेशी माता मन्दिर के प्रांगण में सात दिवसीय माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 24 से 30 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने स्वागत के समय शिविरार्थियों से कहा कि हम यहां पर अपनी खोई हुई थाती को वापिस पाने के लिए आए हैं। अपने परंपरा, संस्कृति और कर्तव्य को हम भूलते जा रहे हैं, उसे याद दिलाने के लिए हमें यहां बुलाया गया है। इन सात दिनों में आपको अनेकों बातें बताई जाएंगी, साथ ही विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उन बातों को आपके आचरण में ढाला जाएगा। इसलिए किसी भी प्रकार की लापरवाही को अपने ऊपर हावी न होने दें और जागृत रहकर अभ्यास करें। विदाई कार्यक्रम में शिविरार्थियों से कहा गया कि इन सात दिनों में हमने अपने आप को जानने का प्रयास किया है। हमने यहां जाना कि हम किन महान पूर्वजों की संतान हैं। हमारा स्वधर्म क्या है, कर्त्तव्य क्या है, ये सब भी हमने जाना। इस सब को हमें यहां से जाने के बाद भी स्मरण रखना है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यवहार करते समय हमें स्मरण रखना है कि हम क्षत्रिय हैं और उसी के अनुरूप हमें आचरण करना है। शिविर में जालोर, सिरोही व पाली जिलों के 80 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

बालोतरा संभाग में कल्याणपुर स्थित जगदम्बा राजपूत छात्रावास में सात दिवसीय माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 25 से 31 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। स्वागत कार्यक्रम में शिविर संचालक अर्जुन सिंह देलदरी ने शिविरार्थियों से कहा कि क्षत्रिय भारतीय परंपरा व संस्कृति का आधार स्तंभ रहा है। हमारे पूर्वज आदर्श जीवन जी कर एक उज्ज्वल इतिहास बनाकर गए और इसीलिए आज भी संसार उन्हें विभिन्न रूपों में पूजता है। हमारी कौम ने जो सिद्धांत बनाए उन्हें पूरे संसार ने आत्मसात कर अंगीकार किया। लेकिन वर्तमान समय में क्षत्रिय पथ विचलित हो गया है। ऐसा क्यों? इसी पीड़ा से पीड़ित होकर पूज्य तनसिंह जी ने चिंतन किया कि ऐसे महान पूर्वजों के वंशज, जो ऐसे श्रेष्ठ मार्ग को छोड़कर इधर-उधर भटक रहे हैं, उन्हें पुनः क्षात्रधर्म के मार्ग पर लाना आवश्यक है। इसी विचार मंथन को लेकर उन्होंने आज से 78 वर्ष पूर्व श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली प्रदान की। इस सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में हम सब संघ के दर्शन को समझने का प्रयास करेंगे। शिविर के दौरान 27 अक्टूबर को माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास का सान्निध्य भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। उनके सान्निध्य में स्थानीय समाजबंधुओ का एक स्नेहमिलन कार्यक्रम भी रखा गया। विदाई कार्यक्रम में शिविर संचालक ने शिविरार्थियों से कहा कि हमने इन सात दिनों में पूज्य तनसिंह जी के दर्शन को समझने का प्रयास किया है और यह जाना है कि श्रेष्ठ काम करने के लिए जो संसार में आते हैं वे रुका नहीं करते, बैठे नहीं रहा करते, आसक्तियों में बंधा नहीं करते, उनको चलना ही पड़ेगा, उनको आगे बढ़ना ही पड़ेगा। आप सबको श्री क्षत्रिय युवक संघ की, पूज्य तनसिंह जी की जो पीड़ा थी उससे पीड़ित करने का कार्य यहां किया गया, संघ का विचार आप सब का विचार बनाने का प्रयास यहां किया गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

दिवराला

सनावड़ा

विभिन्न स्थानों पर दीपावली स्नेहमिलन आयोजित

सेखाला

दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में विभिन्न स्थानों पर समाजबंधुओ द्वारा स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें समाज में संगठन और पारिवारिक भाव को बढ़ाने, कुरीतियों को दूर करने सहित विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई। 1 नवंबर को जैसलमेर जिले में कांसाऊ तेजमालता स्थित दक्षिणी बसिया क्षेत्र के भाटी वीर सपूत रामसिंह पंचाणोत की छतरी पर पांच गांवों - रणधा, मोढा, तेजमालता, जोगीदास गांव और वीरमाणी के राजपूत समाज का दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें उक्त गांवों के सैकड़ों समाजबंधु शामिल हुए। कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा सामाजिक एकता को बढ़ाने में श्री क्षत्रिय युवक संघ की महत्ती भूमिका पर प्रकाश डाला गया तथा पूज्य श्री तनसिंह जी के दर्शन को अपनाकर क्षात्र धर्म के मार्ग पर चलने का निवेदन किया गया। कार्यक्रम के दौरान समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों यथा मृत्युभोज, नशावृत्ति, बालिका शिक्षा की अवहेलना आदि पर चर्चा करते हुए ऐसी कुरीतियों को समूल नष्ट करने का निर्णय लिया गया। समारोह में सेवानिवृत्त पुलिस अधीक्षक किशनसिंह भादरिया, खेतसिंह तेजमालता, एडवोकेट वीरसिंह, कैप्टन हीरसिंह रणधा, ठेकेदार भवानी सिंह तेजमालता, सांवलसिंह मोढा, जालमसिंह रणधा ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन दीपसिंह रणधा ने किया। 1 नवंबर को ही शेरगढ़ क्षेत्र के सेखाला गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ की विभिन्न शाखाओं का सामूहिक दीपावली स्नेहमिलन सेखाला स्थित गोगादेव जलंधरनाथ मन्दिर पर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में महेन्द्र सिंह सेखाला ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के दृष्टिकोण से दीपावली पर्व के महत्त्व के बारे में बताते हुए संघ के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। सेखाला सरपंच प्रतिनिधि अनोप सिंह ने ऐसे सामाजिक आयोजनों की महत्ता के बारे में बताया और इनकी निरंतरता बनाए रखने का आह्वान किया। पदम सिंह ने उपस्थित समाजबंधुओं से संघ से जुड़ने और संघ की शिक्षाओं को जीवन में आत्मसात करने का निवेदन किया। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित स्वयंसेवकों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर दीपावली की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर संत राम सिंह, जेठू सिंह, भंवर सिंह, कल्याण सिंह, भोम सिंह, असल सिंह और देवेन्द्र सिंह सहित अनेकों ग्रामवासी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन भोम सिंह सेखाला ने किया। बालोतरा जिले के सिणधरी कस्बे में स्थित श्री मल्लिनाथ राजपूत छात्रावास में भी राजपूत समाज द्वारा दीपावली स्नेहमिलन समारोह का आयोजन 5 नवंबर को किया गया। समारोह की अध्यक्षता विक्रमसिंह सिणधरी ने की। कार्यक्रम में उपस्थित सिवाना विधायक हमीर सिंह भायल ने अपने उद्बोधन में समाज में व्याप्त बुराइयों के निवारण के साथ-साथ बालिका शिक्षा और संगठन के महत्व के बारे में बताया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रावल किशन सिंह जसोल ने भी बालिका शिक्षा पर अपने विचार रखे। बाड़मेर के रावत त्रिभुवन सिंह ने मृत्यु भोज पर प्रतिबंध और 12 दिनों तक नशे के प्रचलन को मिटाने पर बल दिया तथा इस समस्याओं से किस प्रकार मुक्ति पाई जा सकती है, उस पर मंथन करने की बात कही। समारोह में उपस्थित महंत नृत्य गोपाल राम ने भी आशीर्वचन प्रदान किया और सभी के कल्याण की कामना की। कार्यक्रम का संचालन कान सिंह डाबड़ द्वारा किया गया। अंत में रावल किशन सिंह द्वारा उपस्थित समाजबंधुओं को मृत्यु भोज पूर्ण रूप से बंद करने की शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम में राणा कुलदीपसिंह गुड़ामालानी, इंद्रसिंह नगर, सिणधरी पंचायत समिति के उप प्रधान मोहन सिंह दाखा आदि ने भी अपने विचार रखे। समारोह में राजपूत समाज के अनेकों जनप्रतिनिधि एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में 3 नवंबर को दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। सामूहिक प्रार्थना उपरांत वरिष्ठ स्वयंसेवक उम्मेद सिंह सुल्ताना द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने दीपावली पर्व के महत्व को रेखांकित करते हुए 'समाज और दीपावली' विषय पर चर्चा की जिसमें ईश्वर सिंह चनाणा, भागीरथ सिंह सेरूणा, राजेंद्र सिंह आलसर, बलवंत सिंह महनसर, दयाल सिंह किशोरपुरा, पूर्ण सिंह डाबड़ी, हड़वंत सिंह आशापुरा आदि ने अपने विचार रखे। चर्चा में बताया गया कि अंधेरे से संघर्ष कर उजाले की ओर बढ़ने का विचार पू. तनसिंह जी को दीपावली की रात्रि को ही प्राप्त हुआ, आगे चलकर वही विचार मूर्त रूप में श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुआ। समाज और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वबोध को जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने निभाया, उसी प्रकार हम भी निभाएं, इसी का पाठ संघ पढ़ा रहा है। कार्यक्रम के अंत में सभी ने एक दूसरे का मुंह मीठा कर दीपावली की शुभकामनाएं दी। 2 नवंबर को जालोर जिले की आहोर तहसील के ऊण गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ की श्री राव कुम्पा जी शाखा द्वारा राजपूत समाज का दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें गांव के समाजबंधु शामिल हुए। कार्यक्रम में वक्ताओं द्वारा सामाजिक एकता और शक्ति को बढ़ाने के लिए कार्य करने की बात कही गई। कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली के बारे में विस्तार से बताया गया और पूज्य श्री तनसिंह जी के दर्शन को सभी तक पहुंचाने की बात कही गई। कार्यक्रम में अमर सिंह, भगवत सिंह, स्वरूप सिंह, जसवंत सिंह आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन उम्मेद सिंह ऊण ने किया। 31 अक्टूबर को शेरगढ़ क्षेत्र में इंदावटी की अयोध्या के रूप में प्रसिद्ध बिंजा बाबा बालाजी धाम पर हजारों दीपक जलाकर भव्य दीपोत्सव कार्यक्रम मनाया गया। इस अवसर पर सुंदरकांड एवं भजन संध्या का भी आयोजन हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के बालेसर मंडल के रावलगढ गांव में लगने वाली तीनों शाखाओं रानी दुर्गावती बालिका शाखा, शहीद देवी सिंह शाखा और नागाणाराय शाखा के स्वयंसेवक व स्वयंसेविकाएं भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ के गुड़ामालानी प्रांत के बूठ गांव में भी दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की भूमिका बताते हुए स्वरुप सिंह बूठ ने कहा कि हम सब एक गाँव मे रहते हैं लेकिन जब तक हम एक दूसरे के विचारों से परिचित नही होंगे तब तक हमारा वास्तविक परिचय नही होगा। जोगराज सिंह बूठ ने कहा कि हम आज अपना रूप, अपनी पहचान भूल गये हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपनी कार्यप्रणाली के माध्यम से हमारी उस पहचान को याद दिला रहा है। बाबू सिंह बूठ ने तन सिंह जी और दीपावली की रात्रि को जगे उनके संकल्प के बारे में बताया। प्रांत प्रमुख गणपत सिंह बूठ ने भगवान श्री राम के जीवन का उदाहरण देते हुए बताया कि हम उन्हीं श्री राम के वंशज हैं इसलिए हमें उनके आदर्शों को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कुरीतियों को समाप्त करने और सहयोगी भाव के साथ रहने की बात भी कही। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मध्य गुजरात संभाग में

पाटोदी

तेजमालता

काणेटी, खोड़ा, रासम, शिहोर, गांधीनगर, गेपपरा, पीपण, वडोद, मंगलपुर, मोडासा, गोहिल शेरी (साणंद) आदि स्थानों पर भी शाखा स्तर पर दीपोत्सव मनाया गया। 2 नवंबर को केकड़ी स्थित राजपूत छात्रावास में भी दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम एवं श्री क्षत्रिय सभा केकड़ी की कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में छात्रावास के विकास पर भी विचार-विमर्श किया गया।

बालोतरा जिले के पाटोदी गांव में स्थित श्री जवाहर राजपूत छात्रावास में राजपूत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह एवं दीपावली स्नेहमिलन 7 नवंबर को आयोजित हुआ। कार्यकम में पोकरण विधायक महंत प्रताप पुरी ने समाज में व्याप्त नशे की प्रवृत्ति और कुरीतियों को रोकने की बात कही। जसोल रावल किशन सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि अपने क्षात्र धर्म का पालन करने के लिए हमें संस्कारवान बनना होगा। मानवेंद्र सिंह जसोल ने कहा कि युवाओं को अपनी ऊर्जा अध्ययन एवं खेल जैसी सकारात्मक गतिविधियों में लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सिवाना विधायक हमीर सिंह भायल ने अपने उद्बोधन में बालकों की शिक्षा के साथ-साथ बालिका शिक्षा को भी विशेष महत्त्व देने की बात कही। शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी ने कहा कि समाज में फैल रही कुरीतियों को रोकने के लिए हमें स्वयं पहल करनी पड़ेगी। जब तक हम स्वयं आगे बढ़कर श्रेष्ठ उदाहरण नहीं प्रस्तुत करेंगे तब तक दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित नहीं कर सकेंगे। मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा ने कहा कि समाज को संगठित रहने के साथ-साथ राजनीति में भी सक्रिय रहना चाहिए। कार्यक्रम को बालोतरा प्रधान भगवत सिंह, देवराज सिंह, हनुमत सिंह, पूर्व जिला परिषद सदस्य प्रेम कंवर, पाटोदी उपप्रधान नखत सिंह कालेवा और सेवा निवृत्त पुलिस उपाधीक्षक चंदन सिंह कालेवा ने भी संबोधित किया। आयोजन समिति के अध्यक्ष मोती सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विभिन्न कक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करने या सरकारी सेवा में चयनित होने वाली पाटोदी क्षेत्र के राजपूत समाज की 42 प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। चंदन सिंह चांदेसरा व राजेंद्र सिंह कंवरली ने मंच संचालन किया। समारोह में अनेकों जनप्रतिनिधियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में समाजबंधुओं की उपस्थिति रही।

केकड़ी में सवाई जयसिंह जयंती पर की चर्चा

श्री राजपूत सभा अजमेर की जिला एवं तहसील कार्यकारिणी की बैठक केकड़ी स्थित श्री जगदंबा छात्रावास में 10 नवंबर को आयोजित हुई। सभा के जिलाध्यक्ष महेंद्र सिंह ढोस की अध्यक्षता में हुई बैठक में 17 नवंबर को जयपुर में आयोजित होने वाले महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय जयंती समारोह के बारे में चर्चा की गई। बैठक में जयंती कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया गया, साथ ही क्षेत्र से अधिकाधिक समाजबंधुओ के कार्यक्रम में शामिल होने का लक्ष्य तय किया गया। राजपूत सभा की जिला टीम के सदस्यों के साथ स्थानीय समाजबंधु बैठक में उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां भी बैठक में उपस्थित रहे।

संपादकीय

नारे और प्रतीक में नहीं, सत्य में है सनातन

हाल ही में पूरे देश में दीपावली का पर्व उल्लास पूर्वक मनाया गया। आदिकाल से भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण पर्व दीपावली, जो अंधकार पर प्रकाश की विजय के प्रतीक पर्व के रूप में प्रतिष्ठित है, को मुख्यतः भगवान श्री राम द्वारा रावण का वध करने के बाद पुनः अयोध्या लौटने पर प्रजा द्वारा घी के दीपक जलाकर हर्ष व्यक्त करने की घटना एवं उस स्मृति की पुनरावृत्ति से जोड़ा जाता रहा है। भारतीय सनातन संस्कृति की यह विशेषता है कि यह सदैव उर्ध्वगामी गति की उपासक और जड़ता की विरोधी रही है इसीलिए इसमें चाहे कोई त्यौहार हो, पूजा पद्धति हो, नियम व सिद्धांत हो, वेशभूषा व खानपान हो, ऐसे किसी भी पक्ष के बाह्य स्वरूप की अपेक्षा उसके मूल में निहित सारभूत दर्शन को ही अधिक महत्व दिया जाता है। यही कारण है कि जीवन के उपरोक्त सभी पक्षों में समय के साथ आने वाले ऐसे बदलाव जो उसे और श्रेष्ठ बनाते हों, भारतीय संस्कृति ने सहर्ष स्वीकार किए हैं, किंतु बाह्य कलेवर में होने वाले इन बदलावों को स्वीकार करके भी अपने भीतरी सत्य और मूलभूत दर्शन का त्याग नहीं किया। इस प्रक्रिया के कारण ही समस्त विरोधों, आक्रमणों और प्रतिकूल परिस्थितियों को झेलकर भी भारतीय संस्कृति अपना अस्तित्व बनाए रखने में सफल रही है। लेकिन भारतीय सनातन संस्कृति की इस सर्वोपरि विशेषता और मूल चरित्र पर वर्तमान में अनेक प्रकार के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आक्रमण हो रहे हैं जिन्हें समझना आवश्यक है। दीपावली के अवसर पर पटाखे एवं आतिशबाजी के प्रयोग को लेकर हर बार की भांति इस बार भी देश भर में एक विवाद का वातावरण निर्मित हुआ और इस विवाद के दोनों पक्षों के तर्कों और उद्देश्यों पर दृष्टिपात करें तो हमें हमारी सनातन संस्कृति पर हो रहे इन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आक्रमणों का मर्म समझ में आ जाएगा।

एक ओर वे लोग हैं जो दीपावली पर आतिशबाजी और पटाखों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने की बात करते हैं और इसके लिए वे पर्यावरण को होने वाली हानि व बीमार, वृद्ध, बच्चों और मूक पशुओं को पटाखों के शोर से होने वाली परेशानियों आदि के तर्क देते हैं। कुछ इसी प्रकार के तर्क होली के त्योहार पर पानी की बर्बादी आदि को लेकर भी दिए जाते हैं। यही नहीं, भारतीय संस्कृति में मृत्यु के बाद होने वाले दाह संस्कार में भी लकड़ियों के प्रयोग को कुछ समय से पेड़ काटने के रूप में पर्यावरण को हानि के रूप में प्रचारित किया जाता रहा है। ये सारे तर्क एक दृष्टिकोण से ठीक मालूम हो सकते हैं, इनमें पर्यावरण और जीव-जंतुओं की चिंता की झलक भी दिखाई देती है और एक सरलचित्त व्यक्ति स्वभावतः इन तर्कों से सहमत भी हो सकता है, होना भी चाहिए। अंततोगत्वा प्रकृति और पर्यावरण पर ही हम सभी का जीवन निर्भर है और इसीलिए इन्हें होने वाली किसी भी प्रकार की हानि को रोकने का हमें प्रयास करना ही चाहिए। ये प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। लेकिन जब इस प्रकार की तार्किकता के प्रतिपादकों के व्यावहारिक जीवन को देखा जाए तो वहां उनकी कथनी और करनी में बड़ा अंतर नजर आता है। ऐसे लोग दीपावली के अवसर पर पटाखे और आतिशबाजी के प्रयोग पर तो घोर आपत्तियां दर्ज करते हैं लेकिन अंग्रेजी नववर्ष जैसे अनेकों अवसरों पर अनेक देशों में बड़े स्तर पर होने वाली आतिशबाजी को लेकर मौन रहते हैं। दीपावली पर पटाखों के शोर से मूक पशुओं को होने वाली परेशानी पर तो वे पीड़ित होते हैं लेकिन स्वयं व्यक्तिगत जीवन में मांसाहार से परहेज नहीं करते, न ही कतिपय संप्रदायों के त्यौहारों पर वृहद स्तर पर दी जाने वाली पशु बलि को लेकर कोई पीड़ा व्यक्त करते हैं। भारतीय पर्वों और परंपराओं से वायु, जल आदि प्रदूषण होने की बात करने वाले ऐसे लोग अवैध खनन, पर्यावरणीय मानकों की उपेक्षा कर हो रहे अनियमित औद्योगीकरण आदि के कारण बड़े स्तर पर हो रहे प्रदूषण को लेकर मौन रहते हैं। इनके ऐसे दोहरे आचरण के कारण ही इनकी तर्कपूर्ण बातों के पीछे छिपे कुटिल उद्देश्य प्रकट हो जाया करते हैं। इनका छिपा उद्देश्य भारतीय सनातन संस्कृति के प्रतीक चिह्नों को अतार्किक, अवैज्ञानिक और गलत सिद्ध करके भारतीयता को कमजोर करने मात्र का होता है और इसीलिए किसी प्रकार के सकारात्मक परिवर्तन की अपेक्षा इनकी बातों का प्रभाव मात्र सामने वाले पक्ष की प्रतिक्रियावादिता को भड़काने के रूप में ही सामने आता है।

वहीं दूसरी ओर, भारतीय सनातन संस्कृति के विरोधी उपरोक्त श्रेणी के लोगों की प्रतिक्रिया में सनातन संस्कृति के तथाकथित दावेदारों की जो प्रतिक्रियाएं हैं, वे भी वास्तव में सनातन संस्कृति के अनुरूप नहीं दिखाई पड़ती बल्कि अप्रत्यक्ष रूप में सनातन संस्कृति के भीतरी सत्य को महत्व देने के मूल चरित्र की विरोधी ही जान पड़ती है। ऐसे लोग अथवा संस्थाएं उन्हीं प्रतीकों, जिनको लेकर पहले पक्ष के लोग आपत्तियां जताते हैं, को और अधिक दृढ़ता से पकड़ कर यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि वे प्रतीक ही उस त्यौहार अथवा परंपरा का वास्तविक स्वरूप है। ऐसे व्यक्तियों द्वारा ही पहले पक्ष की आपत्तियों की प्रतिक्रिया में दीपावली पर और अधिक जोर-शोर से आतिशबाजी करके सनातन धर्म की शक्ति सिद्ध करने के नारे दिए जाते हैं। इन नारों के शोर में भीतरी अंधकार को दूर करके अपने भीतर सत्य की ज्योति जगाने का दीपावली का मूल संदेश तो खो जाता है और केवल उसका बाह्य स्वरूप ही महत्त्वपूर्ण बनकर रह जाता है। ऐसा ही सनातन संस्कृति के अन्य पर्वों और परंपराओं के साथ हो रहा है। इस प्रक्रिया में सनातन संस्कृति, जिसे उसके बाह्य स्वरूप के लचीलेपन और अंतर्दर्शन की सुदृढ़ परम्परा के कारण कोई भी बाहरी आक्रमण समाप्त नहीं कर सका, वर्तमान में अपने उस मूल चरित्र को खोकर कट्टरता रूपी जड़ता की शिकार होने की ओर बढ़ रही है। इसलिए आज जितनी आवश्यकता सनातन संस्कृति के विरुद्ध होने वाले आक्रमणों और षड्यंत्रों को विफल करने की है, उतनी ही आवश्यकता सनातन के मूल स्वरूप को समझने, समझाने और आचरण में उतारने की भी है। ऐसा वे लोग नहीं कर सकते जो सनातन को केवल एक नारे और प्रतीक के रूप में प्रयोग कर सत्ता में बने रहना चाहते हैं बल्कि वे लोग कर सकते हैं जो सनातन संस्कृति के आधार में स्थापित सत्य की साधना करके उस सत्य को प्राप्त कर सकते हैं, अपने आचरण में धारण कर सकते हैं, वे ही सनातन संस्कृति के वास्तविक और निखरे हुए रूप को जन-जन में पुनः प्रतिष्ठित कर सकते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी सत्य की साधना का मार्ग है, आएं, हम भी इस मार्ग के साधक बनें।

बेंगलुरु में प्रतिभा सम्मान समारोह व दीपावली स्नेहमिलन आयोजित

कर्नाटक के बेंगलुरू में राजपूत परिषद कर्नाटक बेंगलुरु एवं महाराणा प्रताप नवयुवक मंडल के संयुक्त तत्वावधान में दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम 3 नवंबर को आयोजित हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि उद्योगपति समुंद्र सिंह राठौड़, वाणिज्य कर अधिकारी बालाजी सिंह, राजपूत परिषद के अध्यक्ष नरपत सिंह चंपावत, सचिव मोहन सिंह सोलंकी, पूर्व अध्यक्ष भगवान सिंह भाटी, उदयसिंह डिंगार सहित वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे और कहा कि समाज के बीच आकर गर्व की अनुभूति होती है, हमारा इतिहास गौरवशाली रहा है। हमारे पूर्वजों ने त्याग व बलिदान का मार्ग अपनाया और जौहर व शाका जैसी परंपराओं के साथ धरती और धर्म की रक्षा के लिए बलिदान की लंबी श्रृंखला का इतिहास रचा। इस अवसर पर समाज में एकता को बढ़ाने एवं कुरीतियों को दूर करने पर भी विचार विमर्श हुआ। कार्यक्रम में राजपूत समाज के मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान भी किया गया। बड़ी संख्या में पारंपरिक वेशभूषा पहने समाजबंधु स्नेहमिलन में शामिल हुए। कार्यक्रम में परिषद की गतिविधियों को बढ़ाने करने पर चर्चा हुई एवं कोषाध्यक्ष सज्जन सिंह चांदावत द्वारा आय-व्यय का ब्यौरा दिया गया। इस अवसर पर युवाओं के लिए खेल कूद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में पुलिस अधिकारी कृष्णमूर्ति सिंह गोड़ा, गायड सिह कुंपावत, मदन सिंह कुंपावत, कल्याण सिंह जेतावत, विक्रम सिंह जेतावत, दलपत सिंह देवड़ा, शैतान सिंह, लक्ष्मण सिंह चौहान, सुमेर सिंह देवड़ा, चैन सिंह तंवर, हुकम सिंह जोधा, चांद सिंह भाटी, महेंद्र सिंह अणगोर, लक्ष्मण सिंह पांचेटीया, गोविंद सिंह कुंपावत सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन भगवान सिंह भाटी द्वारा किया गया।

बाली में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

पाली जिले के बाली कस्बे में स्थित श्री उम्मेद राजपूत छात्रावास में श्री क्षत्रिय सहयोग मंच बाली के तत्वावधान में राजपूत समाज प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 5 नवंबर को किया गया। समारोह में विभिन्न कक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले समाज के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को समताराम महाराज, भंवर सिंह मंडली, शैतान सिंह सेंधला, जगत सिंह सांडेराव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक चैन सिंह महेचा, वृत्त निरीक्षक पर्वत सिंह भाटी, बीडीओ भोपाल सिंह जोधा सहित अनेकों वक्ताओं ने संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम निरंतर आयोजित होने चाहिए। इनसे विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समाज की प्रतिभाओं का उत्साहवर्द्धन भी होता है एवं अन्यों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। कार्यक्रम के दौरान समाज के भामाशाहों द्वारा विद्यार्थियों को अध्ययन की सुविधा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से छात्रावास में पुस्तकालय के निर्माण की घोषणा की गई। शिक्षा के साथ ही खेल एवं अन्य गतिविधियों में भी समाज के छात्र-छात्राएं आगे बढ़ें, इसके लिए प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी चर्चा की गई।

निवाई में सती माता की छतरी पर अतिक्रमण पर जताया आक्रोश

टोंक जिले में निवाई कस्बे में स्थित 400 वर्ष पुराने सती माता मंदिर में पूजा के अधिकार को लेकर चल रहे विवाद में स्थानीय राजपूत समाज द्वारा 6 नवंबर को राजपूत छात्रावास निवाई में आमसभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारों की संख्या में समाजबंधु शामिल हुए। बैठक में बताया गया कि झीलाप स्थित बाग में कई दशकों पुराना सती माता का मंदिर है और इस मंदिर की पूजा अर्चना और रखरखाव का जिम्मा प्रारंभ से राजपूत समाज संभालता आ रहा है। लेकिन कुछ वर्ष पूर्व इस बाग की नीलामी हो गई। यद्यपि नीलामी प्रक्रिया में बाग के अंदर स्थित मंदिर को नीलामी से बाहर रखा गया था फिर भी इस मंदिर पर बाग के स्वामित्व वाला समूह अतिक्रमण करके अपने कब्जे में लेने का प्रयास कर रहा है। उनके द्वारा मंदिर के प्रवेश द्वार पर ताला भी लगा दिया गया। इस बात से राजपूत समाज में आक्रोश व्याप्त हो गया। आमसभा में सभी ने सती माता मंदिर में प्रवेश और पूजा के अधिकार की मांग रखी और आवश्यक होने पर इसके लिए और तीव्र आंदोलन करने की बात कही। आमसभा के बाद सभी समाजबंधु एक रैली के रूप में शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए सती माता के जयकारों के साथ उपखंड अधिकारी कार्यालय पहुंचे और अपनी मांगों के साथ ज्ञापन सौंपते हुए अतिक्रमण पर आक्रोश जताया। इस अवसर पर श्री करनी सेना के प्रदेशाध्यक्ष दिलीप सिंह खिजुरी, अजय सिंह बावड़ी, भगवती सिंह बपुई, टोंक जिला अध्यक्ष मदन सिंह चौहान, जगजीत सिंह पलेई, दीपशिखा चौहान, चंचल कंवर समेत अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। देवी सिंह गुंसी, महेंद्र सिंह डीडावता, महावीर सिंह नगर सहित अन्य समाजबंधुओं ने आमसभा के आयोजन में सहयोग किया। आमसभा के दौरान राजपूत छात्रावास में नवनिर्माण के लिए आर्थिक सहयोग भी जुटाया गया।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	25.12.2024 से 28.12.2024 तक	रानियावास, नायला - आगरा रोड, जयपुर **संपर्क सूत्र** - राजवीर सिंह नायला, राजेन्द्र सिंह रानियावास
02.	मा.प्र.शि.	25.12.2024 से 31.12.2024 तक	आदर्श स्कूल, देचू (जोधपुर संभाग) **नोट** - इस माध्यमिक शिविर में कम से कम दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर किए हुए स्वयंसेवक ही भाग ले सकेंगे।
03.	मा.प्र.शि.	25.12.2024 से 31.12.2024 तक	आदर्श महाविद्यालय, देऊ फांटा, नागौर फलोदी रोड पर स्थित (नागौर से प्रत्येक घंटे कृषि मंडी से बस उपलब्ध है। खींवसर से सीधी बसे हैं, नोखा से आने वाले पांचौड़ी उतरकर पहुँच सकते हैं। जोधपुर से आने वाले खींवसर या नागौर उतरकर पहुँच सकते हैं। ओसिया, बापिनी, फलोदी, लोहावट, जैसलमेर से भी सीधी बसें हैं। बीकानेर से आने वाले गोगेलाव या नागौर उतर कर पहुंच सकते हैं। शेखावाटी, जयपुर, डीडवाना, लाडनू, कुचामन, मेड़ता, डेगाना वाले नागौर उतर कर कृषि मंडी से बस पकड़ें। **संपर्क सूत्र:** ओंकार सिंह देऊ - 9828580440, विक्रम सिंह देऊ - 8769014184 **नोट** - इस माध्यमिक शिविर में कम से कम दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर किए हुए स्वयंसेवक ही भाग ले सकेंगे।
04.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	26.12.2024 से 29.12.2024 तक	जयमलकोट (पुष्कर)।
05.	मा.प्र.शि.	30.12.2024 से 05.01.2025 तक	राजपूत समाज धर्मशाला, रामदेव मंदिर परिसर, कचनारा (नाहरगढ़), जिला-मंदसौर, मध्यप्रदेश (मंदसौर से नाहरगढ़-रुपणी-बिशनिया जाने वाली सड़क पर रामदेव मंदिर कचनारा पर उतरें) **नोट** - इस माध्यमिक शिविर में कम से कम दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर किए हुए स्वयंसेवक ही भाग ले सकेंगे।
06.	मा.प्र.शि.	11.01.2025 से 15.01.2025 तक	हैदराबाद (तेलंगाना)।

पिछले अंक में क्र.सं. - 4 पर वर्णित 25 से 28 दिसंबर तक आयोजित होने वाला **सकानी बालिका शिविर** अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया है।

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

कडा (मेहसाणा) में स्नेहमिलन का आयोजन

उत्तर गुजरात संभाग के मेहसाणा प्रांत के कड़ा गांव में लगने वाली श्री क्षत्रिय युवक संघ की बालिका शाखा द्वारा 3 नवंबर को दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन किया गया। गांव के सिद्धराज सिंह व चेहर सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामवासियों को श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में विस्तृत जानकारी दी। सभी ग्रामवासियों ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्कार निर्माण के कार्य को वर्तमान परिस्थितियों में अति आवश्यक बताया एवं पूर्ण सहयोग की बात कही। उल्लेखनीय है कि कडा गांव में राजपूतों के लगभग 300 परिवार है एवं गांव में श्री क्षत्रिय युवक संघ के दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर भी संपन्न हो चुके हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

BNB
ॐ
श्री योगेश्वर छात्रावास
कुचामन सिटी
विशेषताएं
1. कक्षा 6 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान ।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या ।
3. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ।
4. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओ के समीप स्थित ।
5. स्वाध्याय हेतु निःशुल्क लाईब्रेरी सुविधा ।
जिम्मेदारी हमारी विश्वास आपका
संम्पर्क सूत्र :
9772097087, 9799995005, 8769190974
SBI बैंक के पास, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhneyanmandir.org, Website : www.alakhneyanmandir.org

बडोड़ा गांव, रायकी, रूपपुरा और लूणार में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न

(चार शिविरों में 700 से अधिक शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण)

बडोड़ा गांव

रूपपुरा

जैसलमेर संभाग के बडोड़ा गांव में चार दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर 3 से 6 नवम्बर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन रश्मि कंवर देलदरी द्वारा किया गया। उन्होंने स्वागत के समय बालिकाओं से कहा कि जब-जब हमारी संस्कृति और परंपरा पर आक्रमण हुए हैं तब-तब हमारे वीरों के साथ वीरांगनाओ ने भी उन आक्रमणों को विफल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। परंतु वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में हम अपने कर्त्तव्य को भूलकर पथ विचलित होते जा रहे हैं। आज जब हमें कर्त्तव्य और मर्यादा की शिक्षा देने वाला कोई नहीं है, तब श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारी उज्ज्वल थाती को हमारे सामने रखकर हमारे कर्त्तव्य, हमारी मर्यादा और परंपरा के बारे में बता रहा है। आप इस शिविर की सभी गतिविधियों में उत्साह, निष्ठा और मनोयोग से भाग लेवें जिससे आप अपने कर्त्तव्य को जानकर उसका पालन कर सकें। विदाई कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इन चार दिनों में संघ ने आप में कर्त्तव्य बोध जागृत करने का प्रयास किया है। नारी धर्म की बातों को विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आप तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। संघ ने आपके जीवन में जो प्रेरणा जगाई है, यहां से जाने के बाद उसे विस्मृत मत कर देना। उसे स्मरण रखते हुए अपने परिवार और समाज में अमृत तत्व की प्रतिनिधि बनकर जीवन जीना है। उन्होंने कहा कि आज के बदलते परिवेश में संस्कारों को स्थापित करना बड़ा ही कठिन कार्य है, जिसे संघ कर रहा है। हमने शिविर में जाना कि हमारे राजपूत समाज की अनेक वीरांगनाओं ने अपने कर्त्तव्य पथ पर आत्मोत्सर्ग के अद्वितीय उदाहरण रखे हैं। नारी स्वयं शक्ति का स्वरूप है अतः आप स्वयं को कभी कमजोर नहीं समझें और कर्त्तव्य मार्ग पर डटी रहें। शिविर में जैसलमेर संभाग के 57 गांवों से 380 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला, गिरधारी सिंह धौलिया व विशन सिंह खिरजां का सान्निध्य भी बालिकाओं को प्राप्त हुआ। प्रह्लाद सिंह ने स्थानीय समाजबंधुओं के सहयोग से व्यवस्था का दायित्व संभाला। डूंगरपुर जिले की आसपुर तहसील के रायकी गांव में भी चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर चाइल्ड हेवन पब्लिक स्कूल के प्रांगण में 26 से 29 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला ने शिविरार्थियों से कहा कि चरित्रवान, अनुशासित और समर्पित युवाओं से ही कोई भी समाज सामर्थ्यवान बन सकता है। युवाओं की ऊर्जा का सदुपयोग उनका सही दिशादर्शन करके ही किया जा सकता है। इसीलिए संघ अपने शिविरों और शाखाओं में युवाओं को इस प्रकार का अभ्यास करा रहा है। उन्होंने कहा कि अभ्यास और तपस्या पूर्ण जीवन से ही श्रेष्ठ मार्ग पर चला जा सकता है। इसलिए हमें बार-बार संघ के शिविरों में आते रहना है और अपने आप को लगातार संघ के संपर्क में रखना है। शिविर में उदयपुर जिले के बेमला, कुण्डली, बामनिया, सलुम्बर जिले के शक्तावतो का गुडा, कुराडिया मेड़ी, भभराणा, बांसवाडा जिले के सज्जन सिंह जी का गड़ा, लाम्बापारडा, काकाजी का गड़ा, गनोडा, दुकवाडा, मेतवाला, धुलजी का गडा, बस्सी चन्दन सिंह, उदाजी का गड़ा, पिछोडा, डूंगरपुर जिले के गेंहूवाड़ा, रामगढ़, रायकी, नांदली अहाड़ा, पचलासा बडा, पचलासा छोटा, सरमरिया ओडा, करवाखास, वणवासा, गडा हटकिया, अमृतिया, गडा एकलिंग जी, टोकवासा, वाडा कुण्डली, करवा छप्पनिया, चुण्डियावाडा, इन्दौडा, मुंगेड, लीमड़ी, पाडला सोलंकी, नांदलीसागोला, सरियाणा, करवासा, ओम्बाडा, सलावत, घाटडा, देवली, खरोडिया, तालोरा, बडी वसुंदर आदि गांवो के 214 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। किशन सिंह रायकी, लक्ष्मण सिंह करेलिया, ईश्वर सिंह वाडा कुण्डली ने विद्यालय के सदस्यों व ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन भी आयोजित हुआ जिसमें आसपास के गांवों से समाजबंधु शामिल हुए। नागौर संभाग के कुचामन प्रांत के रूपपुरा गांव में बालकों का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 27 से 30 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए नागौर संभाग प्रमुख शिम्भु सिंह आसरवा ने कहा कि यह शिविर एक यज्ञ की तरह है जिसमें हम सभी ने आहुतियां दी हैं। इस यज्ञ का प्रकाश हमारे पूरे जीवन को प्रकाशित करने वाला बन जाएगा यदि हम यहां बताई गई बातों को अपने जीवन में उतार लें। ऐसा निरंतर अभ्यास से ही संभव है और यह अभ्यास संघ की शाखाओं और शिविरों में सदैव उपलब्ध है। इसलिए उत्साहपूर्वक बार-बार संघ के शिविरों में आते रहें और स्वयं को ऊजार्वान बनाते रहें। उन्होंने कहा कि केवल अपने लिए जीवन जीना क्षत्रियत्व नहीं है। हम पर अपने परिवार का, समाज का, राष्ट्र का जो ऋण है उसे चुकाना हमारा कर्तव्य है। उसे किस तरह से चुकाया जा सकता है इसका मार्ग हमें संघ बता रहा है। शिविर में रूपपुरा, रसाल, आसरवा, राँवा, भरनाई, रसीदपुरा आदि गांवों के 72 युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। नन्द सिंह, मनोहर सिंह, मेहताब सिंह, श्रवण सिंह, इन्द्र सिंह, जोगेन्द्र सिंह, गजेन्द्र सिंह, राहुल सिंह, हिमांशु सिंह एवं समस्त ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया। जैसलमेर जिले के लूणार गांव में भी बालकों का चार दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 4 से 7 नवंबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन भैरू सिंह बेलवा द्वारा किया गया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि आज के समय में व्यस्ततम जीवन जीते हुए किसी के पास भी इतना समय नहीं है कि वह समाज के बारे में, राष्ट्र के बारे में और पूरी मानवता के बारे में चिंतन करे। लेकिन संघ अपने इन शिविरों में उस व्यस्तता में भी हमारे भीतर इस प्रकार का चिंतन विकसित करता है। शिविर में हमारे भीतर इस प्रकार की वैचारिक शक्ति का निर्माण किया जाता है जिससे संकल्पवान बनकर हम समाज, राष्ट्र और मानवता के लिए उपयोगी बन सकें। उन्होंने कहा कि यहां से जाने के बाद हम अपने सभी दायित्वों का पालन करते हुए इस प्रकार का जीवन जिएं जो दूसरों के लिए भी अनुकरणीय बन सके।

रायकी

शिविर में लूणार, म्याजलार, बैरसियाला, पोछीणा, सलखा, गुंजनगढ़, जोगा, राघवा, सेउवा, सांकड़ा, मोती की बेरी आदि गांवों के 70 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया।

मखियाव में ऐतिहासिक स्मारकों के जीर्णोद्धार को लेकर हुई बैठक

गुजरात के अहमदाबाद जिले की साणंद तहसील के मखियाव गांव में गायों की रक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त होने वाले वीर मालदेवजी और उनके साथ सती होने वाली कुंवरानी के स्मारक पर 2 नवंबर को एक बैठक रखी गई जिसमें इन ऐतिहासिक स्मारकों के रख-रखाव एवं जीर्णोद्धार के संबंध में चर्चा की गई। अमर वीर मालदेवजी स्मरण समिति के तत्वावधान में आयोजित इस बैठक में मालदेवजी के स्वर्णिम इतिहास को सभी तक पहुंचाने के लिए कार्य करने का भी निर्णय हुआ। बैठक में गांगड़ ठाकुर रघुवीरसिंह, भारद्वाजसिंह, अजयपालसिंह और देवेश्वर सिंह गांगड़, प्रदीपसिंह वाघेला बकराणा, धर्मराजसिंह वाघेला छबासर, जिला पंचायत प्रमुख प्रतिनिधि जगदीशसिंह वाघेला, नटूभा वाघेला गोधावी, भगीरथसिंह विंछीयां, दिग्विजय सिंह लेखंबा सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। वाघेला इतिहास संशोधन समिति से दिग्विजय सिंह पिंडारडा और उनके सहयोगी भी बैठक में शामिल हुए। कलोल, बावला, धोलका, वीरमगाम सहित क्षेत्र के अनेक गांवों से समाजबंधु बैठक में पहुंचे।

उल्लेखनीय है कि वाघेला राजपूतों की गांगड़ रियासत के सबसे पराक्रमी राजा श्री जैसगजी हुए जिनके युवराज श्री मालदेवजी का विवाह गोहिलवाड के शिहोर के गोहिल वंश की कुंवरानी के साथ तय हुआ था। सन् 1694 में जब मालदेव जी विवाह के बाद बारात लेकर वापिस गांगड़ जा रहे थे तब अहमदाबाद के सूबेदार ने मखियाव गांव में अनेक गायों को अपने कब्जे में ले लिया। यह बात मालदेवजी को पता चली तो वे विलंब किए बिना हाथ में मिढ़ोल बांधे हुए ही तलवार लेकर गायों की रक्षा करने पहुंचे और युद्ध में अनेक शत्रुओं को मारकर स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हो गए। इस बात की सूचना जब उनकी पत्नी को मिली तो वे रथ लेकर मालदेवजी के पास पहुंची और उनके मस्तक के साथ चिता पर बैठकर सती हो गई। मखियाव गांव में आज भी वीर और सती को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है।

विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश) में दीपावली स्नेहमिलन आयोजित

आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा नगर में स्थित कनक दुर्गा शक्ति पीठ के परिसर में क्षत्रिय राजस्थानी राजपूत परिषद का दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम 10 नवंबर को आयोजित हुआ। कार्यक्रम में महावीर सिंह, महेंद्र सिंह मांगलिया गुडा, रविन्द्र सिंह देबावास, रामसिंह चारणीम, मदनसिंह मवडी, गंगा सिंह राजमुंदरी, बहादुर सिंह सवराटा आदि ने अपनी बात रखी। वक्ताओं द्वारा कहा गया कि शिक्षा पर अधिक जोर देने के साथ ही आपस में संगठित रहना भी आवश्यक है। आर्थिक प्रगति के लिए समाजबंधुओं को व्यापार के क्षेत्र में आगे आना चाहिए। साथ ही श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा लगाने और उसमें युवाओं को नियमित जाने की बात भी कही गई और बताया गया कि संस्कार व चरित्र निर्माण की शिक्षा के साथ ही स्वस्थ व उत्साही बने रहने में भी शाखा सहयोग करती है। स्नेहमिलन में विजयवाड़ा व आस-पास के क्षेत्र में निवासरत प्रवासी समाजबंधु शामिल हुए।

विभिन्न स्थानों पर विशेष शाखा का आयोजन

चित्तौड़गढ़ प्रांत में 10 नवंबर को तीन स्थानों पर विशेष शाखा एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ। प्रथम शाखा चौहानों का कंथारिया में आयोजित हुई जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने संघ के उद्देश्य एवं कार्य प्रणाली के बारे में बताया। सुरेंद्र सिंह कंथारिया ने भी अपने विचार रखे और इस क्षेत्र में संघ के शिविर आयोजित करवाने में सहयोग की बात कही। जोगेंद्र सिंह छोटा खेड़ा ने संघ के आनुषंगिक संगठनों के बारे में जानकारी दी। वरिष्ठ स्वयंसेवक बालू सिंह जगपुरा भी सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। दूसरी विशेष शाखा चंदेरिया में आयोजित हुई जिसमें नरेश सिंह पिलोद ने संघ का परिचय दिया। तीसरी शाखा नगरी में आयोजित हुई जिसमें जीवन सिंह नरधारी व राजेंद्र सिंह नगरी ने संघ की शाखा व शिविर के बारे में बताया। 10 नवंबर को ही फलोदी क्षेत्र के बामणु गांव में स्थित नागणेच्या माता मंदिर में विशेष शाखा एवं सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया, फलोदी प्रांत प्रमुख भवानी सिंह पीलवा, नरपत सिंह राजगढ़, खंगार सिंह झलोड़ा सहयोगियों सहित शामिल हुए। 3 नवंबर को चंदेरिया (चितौड़गढ़) स्थित रविंद्र सिंह के निवास पर भी विशेष शाखा का आयोजन हुआ जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

जयपुर व चाकसू में मनाई सवाई जयसिंह द्वितीय की जयंती

श्री राजपूत सभा द्वारा जयपुर स्थित श्री राजपूत सभा भवन में 3 नवंबर को जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय की 337वीं जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में उपस्थित समाजबंधुओं द्वारा जयसिंह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करके उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की गई। राजपूत सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने सवाई जयसिंह के जीवन चरित्र एवं महान व्यक्तित्व के बारे में बताते हुए कहा कि सवाई जय सिंह एक दूरदर्शी एवं आदर्श शासक, वीर योद्धा, श्रेष्ठतम नगर नियोजक, कुशल प्रशासक होने के साथ ही ज्योतिष विज्ञान के भी महान ज्ञाता थे। उन्होंने 17 नवंबर को सवाई जय सिंह जी की स्मृति में श्री राजपूत सभा जगतपुरा छात्रावास में आयोजित होने वाले रक्तदान शिविर के बारे में भी जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में मोहन सिंह बगड़, गजराज सिंह कैलाई, जितेंद्र सिंह सरवड़ी, लोकेंद्र सिंह लोटवाडा, बहादुर सिंह शेखावत, जगमोहन सिंह सहित सभा के अनेकों पदाधिकारी एवं समाजबंधु उपस्थित रहे। राजपूत सभा की चाकसू इकाई द्वारा भी 3 नवंबर को चाकसू में सवाई जयसिंह द्वितीय की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में चाकसू सभा के तहसील अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह गरुड़वासी, महासचिव सुरेंद्र सिंह गरुड़वासी, हेम सिंह चंदलाई, गोकुल सिंह, अर्जुन सिंह हिंगोनिया, प्रहलाद सिंह सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे।

(पृष्ठ दो का शेष)

प्रेरणा के...

अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप संघ रूपी इस बीज को कितना संरक्षण और पोषण प्रदान करते हैं। शिविर में थोब, रेवाड़ा, देमो की ढाणी, दहीपड़ा खिंचीयान, कानोड़, साजियाली, चान्देसरा, साथुनि, वरिया, सरली, सरवड़ी, शिवकर, गंगाला, शिव, खडाली, पिंडारन, पिपलून, सैला, कुण्डल, पादरू, अकदड़ा, दुधवा, दाखा, बिजराड़, हाथमा, बडोड़ागांव, गुड़ानाल, इन्द्राणा, थापन, खारा, उण्डखा, सवाऊ, टापरा, मुंगेरिया, कालेवा, काठाड़ी, सिणेर, बुड़ीवाड़ा, देवंदी, किटनोद, कितपाला आदि गांवों के 98 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था का दायित्व स्थानीय समाजबंधुओ ने मिलकर संभाला। संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी भी सहयोगियों सहित शिविर में उपस्थित रहे। जैसलमेर संभाग के सनावड़ा गाँव में भी सात दिवसीय शिविर इसी अवधि में आयोजित हुआ। शिविर में युवाओं को हमारा उद्देश्य व मार्ग, हमारा इतिहास व संस्कृति, केसरिया ध्वज, अनुशासन, लोकसंग्रह आदि विषयों पर संघ का दर्शन समझाया गया। शिविर संचालक महेंद्रसिंह गुजरावास ने विदाई के समय शिविरार्थियों से कहा कि हम सबने सात दिन इस प्रांगण में रहकर क्षात्र तत्व का अभ्यास किया है, इसको वापिस संसार में जाकर भूलना नहीं है। हमें सत्व के रक्षण व विष के विनाश में सदैव तत्पर रहकर अपने क्षात्रधर्म का पालन करना है। उन्होंने कहा कि हमारा कार्य लोकसंग्रह का है जिसमें अपने व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाए बिना प्रभाव क्षेत्र नहीं बनता। हमारे पूर्वजों ने मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया, उसी प्रकार हम भी हमारे उद्देश्य के लिए सर्वात्मना समर्पित रहें। उज्ज्वल इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने संकल्प को जीवित बनाए रखना है। शिविर में जैसलमेर संभाग के राजमथाई, सांकड़ा, फलसुंड, बलाड़, राजगढ़, भैसड़ा, चौक, केलावा, सनावड़ा, झलोड़ा, बामनू, बोड़ाना, मोती की बेरी, डिग्गा, सेऊवा, म्याजलार, आसकंद्रा, बडोड़ागाँव, केरालिया, भणियाना, संग्रामसर, धारवी, आऊ, झिंझिनयाली, जोगिदासगाँव, भिंयाड़, अवाय आदि गाँवों के 110 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। सनवाड़ा व दिवराला शिविर के शिविरार्थियों को भी शिविर के दौरान माननीय संघप्रमुख श्री का सानिध्य मिला।

अहमदाबाद में संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में बैठक सम्पन्न

अहमदाबाद स्थित बालाजी अगोरा मॉल में माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में 10 नवंबर को एक बैठक आयोजित हुई जिसमें अहमदाबाद की राजपूत संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं स्थानीय समाजबंधु शामिल हुए। संघप्रमुख श्री ने कार्यक्रम में उपस्थित समाज बंधुओ से संवाद करते हुए कहा कि हमारे समाज में अलग-अलग संस्थाएं अलग-अलग कार्य करती हैं। सभी के अलग-अलग ध्येय हैं। लेकिन यदि हम सभी आपस में सहयोग करते हुए एक दूसरे के साथ जुड़े रहेंगे,

नियमित संवाद करते रहेंगे तो हमारा कार्य सरल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ की किसी अन्य संस्था के साथ कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। संघ का मुख्य कार्य है बालकों और बालिकाओं में संस्कार निर्माण करना और पिछले 78 वर्ष से संघ निरंतर यह कार्य कर रहा है। कार्यक्रम में मेवाड़ वागड़ राजपूत सेवा संस्था अहमदाबाद के प्रमुख प्रतापसिंह जोगीवाडा, मंत्री महीपालसिंह वालाकुंडली, भवानी सिंह शेखावत, हनुवंतसिंह मिठडी, संजयसिंह झारखंड, रामपालसिंह बिहार सहित अनेकों समाजबंधु व मध्य गुजरात संभाग के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के पश्चात संघप्रमुख श्री की ओर से अतिथियों को 'यथार्थ गीता' पुस्तक भी भेंट की गई।

देसूरी में सोलंकी महापुरुष जयंती एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

वीर बीकाजी सोलंकी संस्थान के तत्वावधान में पाली जिले के देसूरी कस्बे में स्थित बीकाजी पैनोरमा स्थल पर 27 अक्टूबर को सोलंकी महापुरुष जयंती एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बाली विधायक पुष्पेंद्र सिंह राणावत ने कहा कि क्षत्रिय समाज का गौरवशाली इतिहास रहा है जिससे समाज की युवा पीढ़ी को परिचित कराना आवश्यक है। पैनोरमा स्थल का निर्माण होने से अनेक क्षत्रिय महापुरुषों के इतिहास की सही जानकारी एक ही स्थान पर उपलब्ध होगी जिससे सभी प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने युवाओं से शिक्षा पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। पूर्व विधायक खुशवीर सिंह जोजावर, एडीएम शैलेंद्र सिंह, महेंद्र सिंह गुड़ा मांगलिया, डॉ. त्यागी महाराज सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में 10वीं एवं 12वीं कक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले, राजकीय सेवाओं में चयनित होने वाले एवं राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली 57 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

भेखरेड स्नेहमिलन में प्रतिभाएं सम्मानित

डूंगरपुर जिले में आसपुर क्षेत्र के भेखरेड गांव में राजपूत समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह एवं दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन मां आशापुरा युवा मंडल के तत्वावधान में 1 नवंबर को किया गया। नवल सिंह चौहान की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में क्षत्रिय महासभा के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रताप सिंह भेखरेड, तेज सिंह, रतन सिंह चौहान, देवी सिंह डूंगरपुर, राजेंद्र सिंह सहित अनेको समाज बंधु उपस्थित रहे। सत्र 2023-24 में 10वीं एवं 12वीं कक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं के साथ राजकीय सेवाओं में चयनित होने वाले युवाओं को कार्यक्रम के दौरान सम्मानित किया गया। सभी वक्ताओं ने युवाओं के उत्साहवर्धन के लिए इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की सलाहना की और अपने संस्कारों और परंपराओं को महत्व देने की बात कही। युवा मंडल के अध्यक्ष विक्रम सिंह एवं केशर सिंह ने सभी का स्वागत किया।

संघशक्ति में राजपूत शिक्षक-शिक्षिकाओं की संगोष्ठी संपन्न

श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में जयपुर जिले के राजपूत समाज के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की एक दिवसीय संगोष्ठी और दीपावली स्नेहमिलन का आयोजन 6 नवंबर को हुआ। 'श्री प्रताप शिक्षा समिति' जयपुर के तत्वावधान में आयोजित हुए इस कार्यक्रम में जयपुर जिले में स्कूल शिक्षा विभाग के 26 ब्लॉक में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाएं शामिल हुए। प्रथम सत्र में सभी ने एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया। इसके पश्चात चर्चा का सत्र हुआ जिसमें राजपूत शिक्षकों की समस्याओं, समाज के शैक्षिक उन्नयन व राजपूत समाज के समक्ष वर्तमान

समय की चुनौतियां आदि बिंदुओं पर चर्चा हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने आपसी एकता बनाए रखने पर बल देते हुए कहा कि यदि आप संगठित रहेंगे तो अपने सभी उद्देश्यों में सफल होंगे। समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वहन भी हम तभी कर सकेंगे जब हम संगठित होकर शक्तिशाली बनेंगे। श्री प्रताप शिक्षा समिति के अध्यक्ष प्रधानाचार्य गजेंद्र सिंह शेखावत ने प्रताप शिक्षा समिति के गठन, पंजीकरण एवं इसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के बारे में बताया एवं इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

प्रधानाचार्य मुंडोता महावीर सिंह, एसीबीओ जोबनेर नंद सिंह राठौड़, श्रवण सिंह राठौड़ सहित अनेकों संभागियों ने अपने विचार रखे और आपसी संपर्क और सहयोग को बढ़ाने की बात कही। सभी संभागी शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने आयोजन की सराहना की एवं प्रतिवर्ष दो बार ऐसे मिलन कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव रखा।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org